2. मीनू डॉक्टर बनना चाहती है और रीना अध्यापिका। दोनों के बीच हुआ संवाद लिखिए।

उत्तर–

मीनू – हाय रीना! कैसी हो?

रीना – तू सुना! सुना है दिन-रात किताबों के पीछे हाथ धोकर पड़ी रहती है।

मीनू – कहाँ पढ़ रही हूँ? मेरे पिताजी कहते हैं, ऐसे घूमती रही तो डॉक्टर तो क्या मास्टरनी भी नहीं बन पाएगी।

रीना – अच्छा! क्या मास्टरनी ऐसे ही बन जाती हैं?

मीनू – भाई, डॉक्टरी के लिए तो अधिक मेहनत करनी ही पड़ती है!

रीना – तो क्या मैं मेहनत करना छोड़ दूँ! मैंने तो अध्यापिका बनना है।

मीनू – भई तू ठहरी समाज-सेविका! तूने तो लोगों का चरित्र सुधारना है। इसलिए तू बनेगी तो आदर्श अध्यापिका बनेगी। तू कैसे मेहनत करना छोड़ेगी?

रीना – सच कहूँ! ये दोनों ही काम सेवा के हैं। डॉक्टर तन की देखभाल करता है तो अध्यापक मन और बुद्धि की।

मीनू – क्यों, क्या डॉक्टर बिगड़ी हुई बुद्धि वाले मरीज़ों का इलाज नहीं करते?

रीना – डॉक्टर तो बिगड़ने पर इलाज करते हैं। परंतु अध्यापक उन्हें बिगड़ने ही नहीं देते। वे उन्हें संस्कार देते हैं।

मीनू – सच, अध्यापक का दर्जा ईश्वर के बराबर होता है।

रीना – और डॉक्टर! वह संकट में ईश्वर का अवतार प्रतीत होता है!

मीनू – तो फिर, हम दोनों ही ईश्वर के दूत बनकर काम करेंगे। क्यों?

रीना – हाँ, अगर हर आदमी अपने काम को ईश्वर का काम मानकर करे तो वह काम पवित्र हो जाता है।